This manuscript consists of Mantras, including,

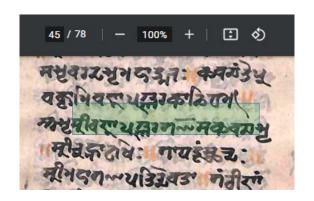
Shri Batuka Bhairava Puja - Shri Vajra Panjara Ganesha Kavacha - Shri Maha Ganapathi Kavacha (Rudrayamala Tantra) - Shri Maha Ganapathi Stotram - Shri Bhavani Stotram.

Shri Batuka Bhairava Puja Mantra

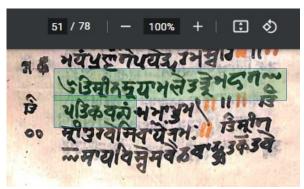




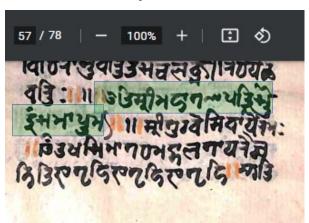
Shri Vajra Panjara Ganesha Kavacha



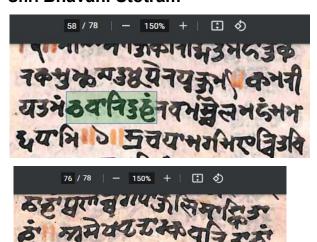
Shri Maha Ganapathi Kavacha (Rudrayamala Tantra)



Shri Maha Ganapathi Stotram



Shri Bhavani Stotram



डांम र येन माय रूप हर् वे। युरेश्वरणये अशं इंडेम विकाभ चेत्र दंगाविष्ठ येनि अपंदिक ने ना निर्देश अल्लाविक्य कहालिंगं कार्वे मुन्ग्रह्मा अद ए।इडाइडियहमांप टां ३३ श्रुष्ट में भू इ इने वा द्यापरभर्-वंषुर्वम Eures Install उउगिक्ष गणिम श्वापाम CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangain

दवाकुउस्ति ज्ञादानाइड रवङ्ग्रथभ अने विक्रक्रे। मिष्टहारिड्युरह्य।।४१०० र्डिकेल्डी)हरूतिहर् भणभकरवराष्ट्र ५००५ र असीव दिनिष्टः भवेदि यानिः इभिन्नानेयाद्रानः ह निष्ठाः सेर्प्रं ५००० गर्भाष क्रिंडिड ॥इन्हा इडिएल ४ असं विण्य। ४ ७ या भ इयंक रथेशापुनरयभन्द य्। प्रदेशनिनित्राभ वर्षिकांविष्युपां एड्राजिन मिक्रपमाज्ञपा

शहेवक्रभ्रमक्ंयु उत्तर इस्ने असे मने मने अस्तन र्रेडि:अभध्येज्यानिविधिय किञ्चित्र प्रमुद्धे धये अ।। य वारिकः कित्रीय देश मद्रभा क्षेत्र विथा यमावि थब्रेकने वयदामित्र ४८ यं उपारिक्ष में सुराय स्था उडेविडिंभभापयेडिं। उडिठ क्विंगि अभ्युभी गोउहंतु वेहं ही हैं हैं। जा विभागा भचरणन्यमहाति भिचम इअं द्विन्मिन्ने वय्यद्विन भवन्त्रीररण्यस्मिर्द्धान्त्रभन

माप्र समदर वराउन हे मिन्ना अस्ति। भाग्रेडिंडिंग्राम्भारतिंद सिटिय अभ्रमभी देश नुष मदावगाउगागिही नीक्तकं करिनेन्यभः। । १ उड्डी वक् के जे विक्रभ न्उभ्रेष्ठयं विविधा। विनमें ठगवड था स्वराख पण्यन्भियुद्धवंड भाव उपानिक के किया भक्षया अ सुद्धा मये। कन्त्वा १००३ ॥ हिन्मे क गवडेव थळवादिन भव राप्य के कि लिए भगियांचे उ

याध्यद्व सुर्भाग निहं वागा०-आगामहेरा क्रिने दिनिहरयावि निप्याना यत्कल्ल्भ विभाग्रे भाष रहार्चनक नमुख्यम वरणनपनीकविषामाञ् नमेक है किए धारण है निस्च दा । वया। । जाननभ बुन्द्राच्याच्याच्या क्यानप्रवायप्रक्रिभद्रहात्र भेष्राभाक्षेत्र विवहत विषाणांक्यमेळगविष् देक ति। अ। भड़का नि माथकथाप वस्ते ज्ञाना । CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

80

भारताया।।।इसा।३०।। राध्र उन्मानिया वित्र वित्र माम्बनभाग त्रितंगत्र ४एनं राजकारिक छा न्यत्वेश्वरक्षात्र भाषात्र थन्नी नेकला यो इनी न थाभासा की ठ पराना र न्त्रभावत्रभावत्रभावत्रभ गैकि दिश्म रूपे स्वरक विकार्गाविद्यादिकारिका र्क रीय मुचे हेय् नठ वांडेगामहाषापुरिविक क्यन डाउ क्य कित अफिनय विवीय तन्त्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

37

व्रक्तात्व भाउभभन्ता ।अ।दिचीरकभभारतम् से दें उकंभाभाग द्वापा 30100मीमामिया ्वीररापिना विजन्ति भरू। कार्गाउपार्क न्यी क्रेगिय सि ।।। क्रिनेने ठग वडेभर्या। आभद्वयंत वेप मिलिक किया रिक किर्वाटेय वर्ष यग्रि क्रिकेरा।शादेव उत्तर्थ शिग्र गर्म किली स शुद्धां ही ०:०:।।राधि

रिष्क्षणं जमञ्चयनभन्नेद्री ग्रामान्य क्षामार्थ अ। विस्वाधित । अ। द्रावास्त्र स्वास्त्र स्वा क्षिण अध्या अध्या इंडीक्ट्राइग्डाइग्डाइ चुरः। समलकः॥ दुस्य मवलायभठ वह थन एउ वड्ण २०५०एम म्य केसर्धामापक न्यः स रगुरा मुन्य स्थान उरंड सामविविधित द्वेमितियेड । उदानियर्ड

सीयंद्रपयेड(गराडेभत्यण व्यत्र आ।। विनमे: मिन्य।। विज्ञवराय। द्वावस्थापाय यत्रभाषा । उहसम्बाय WPTOFOIPTE SEEN रलाम्य एगिरिय किन्रामंय । वेम्रवञ्या। पेल्लुग्य। नाव दन्य यन या एक थिए यानि र्या विरुप। स्रिय ।।४ इस्मेन्स्य यास्त्री र एव्। ४ महना वस्त्र शवयवम्बन्य । जिप्न CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

82

वेयवन्द्र एउ इत्याय

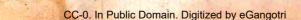
वेम्यन'य।।भड़ार देवउप भिक्षात्रेक मार्थेड स्थान स्थान दहमाई दिया द्वार भ्।मचीउउनम्बद्धार रवार्थयान्यान्य वर्वयवमञ्जलक्षेत्र ध क्ट्राहिस निसंभाग्य कि नभर्थ अर्थ मास्त्राभन रण्यस्त्रिरयथिप्रचय 39 नद्रमाक्यिविमुभ्रष्ट

यश्वयाचियवयन्त्रास्थ्य क्षयभेष्ठ इसवक्रद्रभमे धडः।। द्रियः विणिविणश्रः वितर्भाटक वितर्भाव क्रिम्डेडिवर इनिर्देश्वर बिग्ऊतः।। स्रथनिम ४४ अवनिनिवयप्रम् क्डिमिय्र मिर्हिया मिर्हिया व्याष्ट्राभ्याञ्चाहरू **छे उन्ध**नेर विकास र मि विने ल देकार युगा छ द र विभम वर्षे भरिवम् व उपर्याम्य स्मारमिकार

83

भवाभरेश्यादिन गुपन あるでいかときまりる नारवप्राप्तकल्वर गाउँगस्य उभमीय चरणू च पात्रं परंज्यांनी य भण्डेयरियित्रयेत्राविष भागपूर्वतरायवंड्रा や日本不を「下の」でする रिविविज्यमान्य ४५५ म केएभद्रवस्थ्य भा। वनापेयुरेन हिनेनाभर अधिमयन्यम्भि म्कन्यन्यम् गर्यं भ





मऊभागिविभभः ऊभागः॥॥।। घर डिज्जा हिंदी अप्रचे वरंग्ये ये राज्ये जा भाष्ठित्र **५१ द्वर्ग मेच दें ६ तमय** द कं इंडिसिस्सिस्सिक्सि राभकी दिन मनभी मार्ड भागके अभिविम् अपार्थ । के भटडडवं थे इंच है भेड़ार स्ट्रिक्स्स्र एक्स्स्र विश्वारहरू उम्रेके-विमधे। मनेव्राग्व क्ष्मकंषयग्रं दत्तेत्व व गा। हिम् किल्लिक किल्लिक विभिन्ने।।भिन्निक्षित्रद्विक्

मेथाइंदिनभारियेजाम्बर् उनेयभिदिर भेनभिद्रर एयउ। किंभ्रमभरके प्रेजीय रवस्त्रण:व्रुटः। मन्त्रवरः मनं अपया ॐ दत्तेत्र हैं।।। 声中国李马马》中中的 उषि अधिविद्यानक य हिंउवाडइ**। उन्ने के इ**टन्ने ने श ।मेथवा लिभीकर्।। भर्यभी उतिरुप्ता रापा १००१ हा हा 1313191001714131रेगमल म्यामार्कार्कार्या ियुद्यक्राविष्मा वियम मय्यानव द्वित्यका

30

रहे।। ४३ थ्येके। नक ज्ञह व्यान्य द्वार्य के व्यार्य के। कित्या प्रमानक नर्भ केम यह व्यामा।

G091 13331 13391 क्रमावत्त्रका मान्या व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत 10331 13301 थरमकल्यम्बर्कः व्यद्भकत्य ६ तक गभः महम् ४ वर्ग संग्रे 103/31 क्रियं में प्रस्ति निर्माण 3301 1 13031 करणवासी भाष म्युविमायुत्रिभाषं भयुत्रियुल् अवग्रहार प्रतियुक्त केव L' Lou in remit pomain gonzec by e Gangofin & To

छंथीकंथक्रिम लिविक्रें: मदाणाय मागा है। वा नेती। उ। गंभें : य ज्ञानि विश उभतिनिश्रीश्रीक्र अप "作情有疾病的心思。" स्वस्माति के भाषा युक्ताविया अद्देशका दं निकियीम्कीश्वित्रभूनाप **५** अड्वयेवभुक्तरेव मुस्। भष्टपार्थिक नेपान देशीरणन्या अवस्थान र्मण्या उत्तम इ उपक्षेत्रा।।

S

RE

॥ ३३: ४७ या भइयं के दाउर॥ यदा।। इर्थ्य वंधे दुमवारेश टेनिम एक भन्यवनं प्रम्ये उर्।। उउन्। भवज्ञानिय उथ विकार कर हिराकारी धिकहं का भेष एं स्वित हुई इंपवनंजाके वेडा डडभूमव मु'रिमम् । अम् । में भूरे मी. उद्येवित्रष्ट्यहाँ प्यवंग CC-9. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कानलवयं असे के के केंद्र मीमही रचार श्री नडेन खरी पाइके मीमी खेड असी पाइ कं प्रराचाभित्रभः॥ इडिग्रा कडप्य उपरी पने वह संप ह्यायल्यायवामाने वह भ'तयालये इटाउ ॥०-३॥ राष्ट्रिय संग्रहण्या हाधेवहमें सुर्वेष्टिय इंडरण्यभाभित्रिक वर्डभ रेवडरू भटा महे सुरा ह **3** उर्गेर्पंरापदलंगम् क्षीन्थर्याप्रम्भडाजिस CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri 26

नभः।। भष्टा यहरायकाय नभा तंत्रहापाउक मुराय ニャトロっていないにっちゃ विद्यमण्यायनभाक कुभावत्रभू ॥ भदापकुण यगभः॥भद्रायेटक्येग्गः जिक्हण के हर्दिहारा निः।। वच्यहावित्र るでいるマスライヤーえて भाषा कित्य अभिक्ष **अप्रमेशकार्यम्** ।। भस्मकादे उत्र उत्र अ **५४।३सादिअ।कथा** सकः। दिनयनः न्यानिम्

त्रज्ये देव । अस्वर्गभ भिष्ये विहीसी अख्या क्राधिर स्वउरभद्धा धरंभर विधाउचे विषय गड्डिक्च के प्रश्नेक करते सि:॥३॥वंसन्त्र॥वंसन्वव रंगितु उसी विधानार्ग नेभः।।उथवीउ एउं वर्द्धिव मुक्तिने भड़ा सम्भाग्य रंग्नेक्वरनविद्वरिगार्व मुउभाषा । । तिग्राम र्स मान्य का अपना प्रथ ।। वंकं येकं विश्व कार यनभा उड़मने विस्तति CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वित्राष्ट्राण्यभद्गत्रग लक्के विशामीभद्गत्गि देवहराना भद्गानुद्वाचित्रभ विदेशहतार्विदेश क्षेत्रविश्वभाकपाल व ग्वद्रप्राभित्यभव द्रमादी र को विद्रास म्हाराम् अहस्तान्य स्थान रागियार में भद्रतर एक के भराविवन् । उने उस भ दाभा ता विकिथा टम्डलम् ४३५ वर् ३४ इत्यान विक्षिम्।

उत्तरक के इथा स्वर्ध व्याक्षण हमान्य दिनेद**ु**ल्यभाष्ट्रभे महार्था हा इस् ~33।।१।।४३।।१।।१। ।दिशिक्षाक्षाक्षित्री मीभः भड़ मुंभग्णिय उये भुष्या है जो में भिष्य इत्रालक्ष्यरणतां क शिव्यक्तमन् गिथ उधे रुका विस्व उस्तु ये का हिट्युमार्युमारित हरडाउ। भेटा ॥ यह

द्वराराविता। पाइवाभ 53 दलनियडमि**उंध**क 220012 क्षवद्भाग्य रातक राभक व AKUESKED? स्ति इस विभक्त DIFFE TOP डभीवीरिभट्यभ्। उर्व と13月まみだけではすい とうかいかられている गरमाग्रहाराजा

बडगाडा।विभागमयाडा। कालिविधिमिडेंभेयजेव हिन्द्र अधिक है। इन्हें र स्ववंतः हिक्स अत्याक्ष्य भागम् र र मधीर उभी वारं इयद्यां कड् हर्मान । । प्राचित्र विषय जैंडगियंग्यभद्राचेह्याथ द्रभाक्य अंश्वर ते देश इस वाक्रा-डिविडन्। हिंदी वास्त्र यंग्रहाकि।शिक्षाहा १र सुरितेइङ्ग्लाभाषगत्र्युप जपदीयमग्रह्म हात्र ने भिषमिडिंग में बार्स अविष्टा १०९ । है। इस्ति त्रमां ठये द्रांद्र त्र्यम् भने र इस् देव पत्र वि उक्रायम् अभागामा किंथा प्रातिशियां रह नभवनित्रं । उवस्पादमाप ग्रियदांमीतेष्ठगरनकं 🖏 । यमकुरमभिन्य उद्देश भक्षित्रभाष्ट्रभाष्य् त्य द्वारा प्राप्त का स्थान

वंशी व कारहार हो का का किथिन रणहरू अधिन इहितायाचे भंग ग्रास् अरुग ।अ।भ्राद्धाः इतिहा ज्या।०३॥ छन्नेकी र द्वायां का किल् मजीरगरवप्याःक भग्नेवम्बा भन्ने दे क्रि:भिषमिउवसिक् वानेपवी जी। गिरांभाकी डि: मुक्गभनग्रः ४रु नद्यक देश मार्थिय

भारिक्षरणयाउरण ऐसे ठ भरारणिभूने इः।। की भम्र व नेनभाक्ष्य के विश्वके गरः ाठभा छत्। अपूर्व देशका व भान्याक् ।। भुक्षान कवर्राम् इत्याद्वरणः ।।मडाकुतकपत्तप्डापष्ठ द्रमुकवादनः॥अत्या<u>ध</u> यभवाज्यस्मितिप्र यभज्ञीभन्ग्यभव्य ध्रमभराय ५ इत्रमार कग्रिजयमहेदिवन वस्त्रीं निवपया १। भर

मर्भरेगरेग ।। विश्व भर्बे अविष्यु उउन भन्न विधायभवाउ तभिष्ठियरण हिरयायोगः । अन्द्रीनं सुर्ध्य भवः ध्रमभन यमिरभञ्जा ४ हें भारक युर्भु उप्य PERSONATION वधर्ए। इन्। इनियाय अ विवयायक्री ापणड जियद्या छहे । से ह विभव्यक्ते स्वासिया मिउंग्डाडाच दामपू

यहरा। वंगरक रावायभ यिवयेग्य भारत्य ग्यांभा लढबंगबंगभगायिक न्यट करवायभभ'-। उड़ नियमि रीहःसभा-॥यम्भित्रप्र थ'लायभम-॥ अचे बुउत्त येमन'-। नहिंगर्गार्गेष्ट्रा यभभा । खत्रवेडालार्ल नकायभभ-॥नेर्डितहांप उक्यमभार्।। वयहर स्राल्यभभ। रे महिविद् युक्तान्यभभग नप्रत्रा एनक वभग । भक्षिति ए उग्रहार्वकयममा अ

नर गर्मक्यभभगानी सरस्यक यभभागा ही भ 5र एनकप्रभागामिव मिक्रिक्सभा विद्यायम थादिहिम बढ्जे हैं अभ ल तर्व ग है रमा विवय क्षेत्रकारितिः अध्ययः । इंडियद्क थ्रावं भन्य निक्षा क्षा हिम्द्र हिम्द्र **एक्ष्याम्याम्या** साध्ने उद्या ए ते व्या प्रमण्ड्य मार्थ मार्थ । अयथ्वत्यस्य प्रमान कित्रामाना मिर्यार्थ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

17

। क्रीचेयर सम्मानिविधि गः। मन्द्रष्ठिषयन्भः मिर्ग ध्र अंस्ट्रिक्सेनाः भाषे क्रियेव उप्येतनः ह्रिट स्नुभरमुतनियिनिय गः भवादेष प्रविद्याएउ सेका देवितंबित्र एड द्रेयणायभंदेव थविंड्जान्याभवन खणामक्रीक मल्मन्यनभः विद्रीप्रिवर्षमः अने विसंखणग्म होनभः यत विगंमाना यानाः याना वि यंपद्भयनभः उद्गे छेनंनद्रयेगः

86

। खित्रवे। विभंगरभ्रहेनभः। विन्द्रे।। वित्रं मनायेनभः वायह । विद्विह प लायनभागमाने विद्यासर मिवभद्रपुरभर युर्भः॥अष्टे॥ वि म्रीयने ४००मेडा खेनभाष्मिभद्धतेमा इंस्टकं मियु थि भा मिरमें येंग थी०नंगुणभक्रभजभित्रये प्रदार । जिम्मनके । उद्घे अमिति। विद्याद्वा द्वा ह्वः हर्ने । स्वार्थ ।। भदः रहे। रण्यः हिर्दे ।। उपः कर लिंडिमिरिन विक्रम्ह्यहंग्रभः। हें इव:उत्तरी हुं रमः। एउं सः भएम

P 3

हेन्यः। प्रेयदः स्वतिकहान्यः हिल्दःकविष्ठिकक्षंत्रभः। हेउपः भड्काउनकार्यात्रहानभः। वि । विश्वःमिष्णयेयथर्ग वंभदःकव ययं अंतर ने अक्षेत्र विषर विरुप:भद्दभश्यक्र । विरुद्धाः यः। भविद्यः एतेः। वरं हके ह ठनरहे। देवसहरया जीभी क्षा वियेन भक्यं। यः यह च । यः सलारे । प्रमेयपाक्रिम विउद्गविद्वग्द्वप्रस्थां विद्ध

88

उलगेहंपभः। छतेरेवभूभएगर् रमः। जीमिक्किरारिककं नमः॥ पिययन:किनिधिकहुंच्याः। असे रयाउक्तिराजनकरप्रार्टन्यः" वंडड्रविड्रहरयायनभः विर्द्ध मिग्भेअन क्रिटेवश्माप्ये ववए। जीभिक्षक्यां पड़ा विचे पेन:नेष्ट्रांड्रंचेचत्। प्रमेटप्र नाभूयदर्भ खपभ्रये ॥ ह नेइयेः।।अभावा म्याभंडे सत्ता ए व्दक्षरवः भागाना निग्रित परनेषद्वययाम् । भरप

8

मृतिभागमभाष्या वियोग यकुराउउँमापारो उन्तिश्रामिथ द्रखेक्वम्। एएवंभःभिन्दे ने इंखे परा विषद्भ गंपराने इभुग्यक्षण वियमनुमाय हर यायमः विमाध्ययम् मिम् येवनभ्र उप्रमापये। ये मन्वेषु कव्याय उभे नर्य नेर्हं । नेभेसदेवण्डभ्यदण विग अस्मान्य । विश्व या य कविद्वती अभिविक्ताम अथवप् वस्ति अमापारी द्राप्ट्राप्ट्रापिडि

89

उष्ठि:भरभारतः मा विद्यारये: रेवानंगाद्वये: उरमप्रले । कानेकडाते । यहाः मिन्ने भिर्भगहे वत्र स्थार मानिहरये। खर्मान्यपाविषी क्रामारीकां के हैं। अदमावा खुरानिकयं। रण्ना अस्यः उभूष'सलए मिनाभी छिएउ विषयं। विरमेललरे। भूनव अक्टिये: भिनेराभिक्षयं। स्थार उमक्षे: । ४ अम्बर्धः । निय्नेष

दद्वित्रत्वि वेदिलाह्यं भवी वर्ण वः वहें यस्त्रित जाउ भनवः। क् ज्ञतः। गानिस्त्रावि स्थिते ज्यः यष्टः । । अवस्य ये: भित्रं मित्रं किंदि । अउतिः । कित्र हो । किया है।। विकंक्षी जुनिय के प्रश्ना अंग्रेष्ट्र ज्याभाः विमायमध्य विमायमध्य उड़िकंभिड़ा येक्र अवस्थकरूप च्यम्बामवाद्यः वंशक्ययं डेडिनेयभभनाने छवडिमपमि नामन्द्रपार्थ अनुसार्थ । स्वाल

90

चाकु भागा विभयविद्रभि। मा ण्यमुरं पविद्रमि भद्रभूण व न्ययङ्गवा प्रत्यामंभरति रयम्पेस्व व इस्त ह्वा ध्रम द्रतेषर्भेष्ठभाग । ५३५३ र द्वार विद्याद्यतेम् इत्याया न्यद्रतेन गय अयस गाम है भभा सत्रेग हैरमः गाउँरमः पृथ्यमः। स्रक्षेभए । यनभ्य विस्मिति रेगज्ञान्त्र गरा उत्तर भवरेषानं प्रथेयप्रिक्टिउन र्नाण्यायायायायास्त्रभाउत्र

多人

थिउ नव व्यवस्थान स्थान ह्यानक्ष्यत्रेयद्विनंगाद्रित्रद्राध द्रीयंगरे १५५ विष्युद्रतेभद्र्य व्ययस्ति राज्य अया गाम्डो उपयीप:भइन्ट:भिक्रामुप्रध नभः योधनभः न्याइउपवर भद्रगुल्थउचे क्रिमणये विचे। भग्धहै। लड्डी विमुक् भन्न द्वार रेक्ड है: । प्रच्या वर्ड ना नमचेवउद्यान् इतिस्थानम् देवड'हः।।ग्राचेदेषुरथं।भाष्य रयं दिर्ध्ययनग्य च्या न्नया

91

इस्कथा वरु ज्या यहा प्रदेश या मारिष्ठा रेहे। थिइग्र वारावेडाकुः वास्रवाया भद्र द्वाया अभिन्द्रंय । भर्य । भन्यय नार्डाय भणवाया निविद्याया भड्भून न् विधुवेनप्रयञ्च ह्यायदेव या मन परेवाय नम् यरेवाय उण्यायया पमुपउयेरवण भद्रयेवया रंमान्यदेवय वंत्रायरेक्य माणिपउयरेक्य अदसर्अमिक्य विनयक्य

B

मिक्र र याद्धि धर्मिया ग एनराय लिन्ने छाराय छल्य स् यादेग्नुय विक्ष्टननया छ प्राज्य सी सामित्र विश्व विधाउये द्वाराष्ट्राप्या भार भ्राध्यान्मच हेर्हीभःम्रिध द्या अअंच्या । क्यं वर्ष न्गरम्य । भड्ये उभद्रियः । थाभाविद्या ४३ दारेवया। क्षण्या भद्रभ्रम् भर्य मानये उभये मान्द्रे ए इएपरे है। उग्ये। एवडे । य किटे। मीमारिक ठगवरे।

भद्रमहरू गवह । बीषरीक्षत्र वह ।। मीड्स क्ष्म वह ।। बीषरीकावह ।। मिवाकनवहै। भू एठनवड्टी भरू छ गवहै। गद्रुष्ठ-। वित्रभुष्ठ-। किलि करु मार्किक माभुक्र भड्भराज्यकारो उद्यदि . उद्यादे टः दमनेक पने हः लिदि हि हः एक यम ग्रेह : भभ स्र के रूप लेहः देनकारिहः वरकारि हः। स्वयः गण्यान्य कामेकान नवग्दरेवङ भीट्डं मीरेवीरी इज्ञानिहक्यनिभिद्वं ज्यायीयः भद्वतः भित्रित्य प्रयोगः यीथ

命?

नमः॥ सङ्ग्रा मणये। एएये।। उद्ये पष्टे युभकवना सुदे। भार भुगीरापये। माश्रमिह्य भगल्त र्ग्नेनाः लाह्य-। यथं । प्रिये। रीयं । वासे । नास्यान् जान विशि:भवापिर्यन्तु का बेनमः । असं । अन्य कि । अस्ति। श्रा सिक्ष भक्षर्यः भिद्रिग्स् । यत्रदीनं दियदीनं विविद्यानं न्हानं भन् दीनंय प्रशेषक्ष ज्ञानिक प्रमेश्रक भ्याण्यन्यामंत्रदेवी अर्थे सप्तर्भः श्रिम्भरीयंत्रभः ।। प्रतः

मंबे ।। यहा उरी। न्यभ्यभ्याय क्षायारेवर्टः द्रार्थिः यम्स कथालेहः खरिहः रिहः एक रम युद्धः ४४क वाने सुरेनाने वेहं विवेदयाभनभः यःकार्विद्रिनिती रेमः मेथ्योग्डरपर विमन्ड यगीराभाउष्टाख्या सभाग टाका मभड्ड: भभात्रवंगनेनभः। स्र के । अयं । विद्वतिक प्रदेश विभाविव भडेको देके इपालभकि द्भाः॥ उभी निवेद्या यह विलेश तीयभंपुडम्। के र विधाउयेनमः

谷多

॥ मञ्जूष्यि अये नभः॥ उडरण्यं वाया ं केदाउ\।।। मीग~नायनभः।।। मीकेश्वेउवाम जिनदरे विगन्न मध्वारभूभदाउतः कवगंतेष् वहानिवस् ध्याकाकाकामा कार्यविष्ण्यक्षामा निक्यार्थ म्बिङ्गात्रेथः गण्यस्य दः म्यिदग~थिउद्रेवङ गंतीरण हीमाजि : ज्ञत् ३ कीलक्म। ए यन गाम अक्रमंभे का अ थांवितियेगः। माष्टान्त विविध्यं मित्र वर्ष्ट्र श्राविधन यन्

भंतेकाका ४ हर्ग भक्त चायर चरमभनभ्याउँपाचडीरा भन्ने । धार्यभवाद्ग्री रेसु भुराभी विषय भागके प्रराभानं का क स्वान्याया भिडळवमभनंवि भुग्लेनभाभि विद्रीम्रीनिमिरः परंभद्रग~पाउः र्वः विनयकेत्ततारंभवित्रा रणेखनेभभ। भाउनेर्ग ७एकन भिकंभग्रान्याः म्डीभवउदेग्र न किन्मिरकामनः। मेमप्रीभाष कि थायामाणीयडित्राः वडाम 9 नेकर ने ए वर के एक प्रमुभ

गानेयेन गलंपाउस ग्रीमंद्रभने वडाविधाउके इतिपाउद्याधा कवादनः।। उर्रेभभवतानिहरेवां प्रथापत्रनः।।हरवभजभागाराष्ट्रा य इ: ४१ ज्यामिन । ४ ह भ्रम उद्धारिमद्वानरानः किएन तिग अध्या मिन्नी ग्राम्य । म देशवड्योड रेडिडिमी एरिय रहि क्ये विराधिव मुस् र वृक्ष्या लाराभभविक वृत्य लि वर्गेन्वर प्राये विर्मान्यः भर थम छितेदि देव । भग्र पर्

इरोष्ट्र जुपार्य वयम्भावियो रण्यं अधिक विकास करा है। मिरमः पद्रथट इंवयः भर्गे वडा परित्रच्च पर्वेषः पड विनर्कः विभावितंत्रवस्तिन न्म मुभरवड्डा असे में हीका लेष्ट्र यो येविक गलकः। यकः न्ध्यान्त्रेनेन्द्रम्यः थित्रभंभडक लेव ये केला विकेरवः उउरमंभिउन्धृश्र्ये म'रुभिराद्यकः ४क्डमर्थ र्टम्भर्थाम्भट्न यगुणना

40

दिन्देश्विमपंड्भरावड्ड । क तमंभं निथी बेट्ट विम डे था सुभुवा । अवर्भवर धाउमहायुग्रमभन् थः।। बर्वेगरण्डलेददेग्रन्थ्ये ही दीने जुडी वडा। ही मी मर्ग्द ममें ए तठ ये की की बन पेवड व्याप्तिसंग्रं भद्रकी उपमद र ए विष्यों गरीने हंयक थिमाम्ब उदिल्यू द्वेष्णंगल्मेय इ इडी दंकवरंगुहं भत्त उर्वेषिया वर्प्यक्रानाभयंग्रान्मभूभूद इतः। याद्रेष्ठअंभवभयंभवायारे

क्मणमा विस्तेननमिति できずる「でありいいろというで मंप्रष्टेय व राज्य ये द्वा अर्थ भिडिय दाये विकास था स्वितिक । यंयंक भयडेक भंडे डेप् प्रेडिय ०३: मानगर्यण्यिहंभवाठीष्ठ दलंतक्षेत्र । जिस्के स्वयंत्र दग्ण्यं अध्यय। भविभि हे भयं प्रष्टुंगेथये इ.गम् व विष्णा A.B ५ डिम्रीतम्याभसे उ हु भदाना थडिक यूरों भभागभा ॥॥ उड़ ê म्रीयाविमिव येत्रभः। विम्रीण न्मयित्रम्बैठ्या कुउके उवे

॥ समितिविध्यग्रम् क्ये दिवाद देउवे। एक्यभंत्रभवरिभने वामाम्डीनाभियागाः जिलाम ननं येवण ७ न उर्दिक रोष्ट्र भन्य दरावरंभभ। पारेशविद्यान्त्रत द्गा जेंभगायवानलकप्रयहाभी ।।नेगनलं निनउर नडेये संने भि विध्यसम्भ्रद्धन्। त्राप्तानं नवज्ञान्त्रन्त्र निमालं भरथ क्ष्मान्य विवाय विवास स्व उ'ते:किविभारेश्रास्थार्भार्भः मश्रेएएर्एरिवाभगद्रएतंभ

97

भण्यकगर्भरात्र।।सीलाकिग मिल्ला हे प्रतिकार के विकास करणि। जभग्रजी भूनग्य हे डे: प्यिण्ययव्यव्यापुरः ४का लयबुंकरमीकरेलभद्भावतंत्रान अपिक्लिन इयाममूहगर् स्द्रभं येमीकाः ५ क्राव्यं भक्तः॥ होग प्रनेडेविमग्री उगाःकला ब्र गर्भ नमिक्रिक इल्डिंग) र्रीमा वे विविष्णगरम्येसम्बद्धाः **डिवारिप्रा कल्टावभनं**श्व मिर्देव:केलभनप्रभुविठ

भविता नामानने नाग र देउंगी वेद्रीक्र विदेशकार विद्यान में देशकार विद्यान कांक्क्लगिडीविद्यं येडे भ्रथः कर्के उपनिद्वा भरेले भरेले भाषेर राम्भ्रष्ट्राथय उंभकता भाजाभा रवादधीक्रजारानेक भिर्दे देश्वभक्षत्र-भगम्याभि।। थयः श्रुल्कः भिवाभनाकुं द्वाजा याद्याची ही भी माक्रान क्य-भाष्यामं उने गवज्ञात्र द विये इ । यमि विशेष इंभ हव ३ । स् उयपर-जालाष्ट्रिय न्केष्ट

98

इंग्रम्भे तस्य याउँ ये किरवाध भारत्येभारेक्षि परस्त्री न अधरेषुडी ने लील वडारेपाम प्रथं । रागा मुक्त प्रमुख्य मुक् वडक्डमड्रमाध्यामा जन दुने हे प्रशेष्ट्र हो हुन रेड ए वश्रीकार्थकः अज्ञाद्धिः जीकरें थे : भिद्ध उभद्रे मिवयें ह एभि। सानेक मके गरामक द ने वेडहर्परणग्रहितीरणभा तू द्वियावयवियेवयविष्यं मुक् मानंकरिम संद्वित्रयानिल

वस्क्यभाषानुरुलेकनलेलने ज्ञानिक्षानम् संभयवेठवेनठं कराविम्बिनेदेवतं। ये प्रचनग एग्ल्यन इंभन्न भिष ० विवेधान । विवेदाराम्य विधान न्डे भर भिमेद्र वभभटकत्रं दिर हमा रामरी मिउराकिये भूगः विभागलग्राणात्मा य अवय विभव गुरु स्योगे भून दंश्य है। वेयः ब्रुती इंप्युवं कले द्रभारा महा अवस्थित गरुननंयम् दुभरागानं विश्वां

सेहाराष्ट्रकस्प्यमम्द्वापदं निरा प्रधानिक्षेत्र हे प्रदेश भारतिक स्थाप रात्रप्रकानः मिवभाउने इ विधान ल नं विनिध उन के य अपन विकी ले क्रसीदलफुः प्रवादयन्य वाग्राम्य प्रश्रिम् प्रशिक्ष प्रश्रिकरों अ भी यही गने के ति कि से पढ़ि गाष्ट्र भक्षारण्यात्रम् सुरानयये विविनास्वित्रें अस्त संक्रीनिण्येक विति :।।।। ७ छम्। भड़न् न्या असे इसमापुर्भा माम्युविमिवायोगः **वेउथिमगणभद्रलग्यने** व् विष्य दी एन ही एन ही प्राचित्र ही ही

भाग के

त्यम् क्टवानिरीका येलाग्रियं रणगढम् भाषीज्ञ र ।। ०। कनकभय विउग्निक भवंदि मिदि मिध्य देश वस्कान्ध्रयज्ञभी भिल्भयनद्वय भष्टेन दिभाउद्यिद्ध या मुभग्न नंग्डी उन्। अ। कनककल ममिक भनमी संरात्त एउ मिन्न भन् भर उक्म उनविष्ठ वभिवाभदेते भिन्भयमित्रभंत्ररधयाभि॥३। उपनीयभयीभक्रेलिक क्रमनीय भू मलेडरसूर । नवर द्वविद्वधर नय मिविके यं एग्रमुडिह उपार क्रिन क्रिके विवि

एक भगकी केंकिए ज लाइवर्डे।। ठगवाउग्भागीयेग्ड्रभिंद भनेभि त्रथिमध्ययम् देनथी विविदे । या अल्लिंग किनि विश्वें अद्यं के नके भुक्त ग्रह ये नयु जुन विभनी यउभेठवानि इंहेनवभं में लंभे ध्यभि। उचयममिर विअव व्रह्मायमिद्रंज्ञभगरं । भन् युग्भ सहमेयरयुग्भ थण्ड्ने अक्रारी जनभारा । गह्रथस्यवभक्ष थमच भंय इं डिल जामका उभिम्। देभथाउनिदर्भदरहेरराम्डम्ग्री जनभारा है। राज्यान्य

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

备

po

...एडी**६लक्के**ललवद्गण्डय है: । जान्ये वस्त्रे विकासिती है देन वह्मभनेविणीयुं १ निदिवं करकम्भं भूए थिदि इंग्डिथिणन्क नया अदिदंठवडीक्रिये अम थहरानिप्रमहत्रभे १० । । । । । म्भाके अस्य विविधेः प्रधे स्टू यभित्रं। हर्षेग्रभयस्य स्ट्रम्थक इहेह्भद्विच्डल भानतंत्राभर गीठगठित्र देने वडंड स्याक्से ष्ठ्रगर्य प्रमक्तय प्रथमन्त्र ४उम्मे १००। भाउः क्राज्ञमयद्विति

उभिरं इ देव विवास मार्थित विवास कलयाभिद्रभगरणभाषामित्रं कमरे: कमानाभलके चिम्रश्व ल सक्तुरिकप्ट्रविषे ।। भ्रापंड्रव वार्कित्रके भित्र के निवासिक के ०३ रिक्त्या अंडे भभक्षे स्थ उयामकायाभावितेः। ध्रथयाश्र दम्य उत्तर में स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ि: (॰३। लेलेमी उभवाभिर्दे: भ क्रमभेगद्गिराजीक्रप्रवे:भार्लिस भस्भे किया भये सके सब देरके: यहांचेरिकडाहकारेश थ०स्य रस्ट्रस्य स्थाने

भाग त

â

5

102

त्ययं भिराप्ति अपंत्र भद्गी जित्।। ०२। व लक्षेत्र के उत्तिभीय ज्ञासभ प्रभ्वतिभन्ने दुर्भभाउ भू यशि छिदि वस्तरहाभयकार्य अ अर्थेनिवित्रंगक्यकि।येश्वीरह पीउपरुंड युक्स भागवत्र भड्ते प्रावायभागिक वर्ष नवरद्वयुर भवाधिउक्भनीयउपनीयपाउक भविलाभाभिरं यद्भ यंद्रप्य प्र विडयिनीयुरं के वहिंदिगु अधे भारश्चापिद्वारुगविद्वार कमाविद्धि अग्लिया प्रारिः

. 103

उक्नक अरे जिस्य ने स्यानि । ।।। भेगवीर अन्यस्य का से विद्यु क्रक्मलक्याभयायः। उत्रेनं नित्रनथिहरक्रमङ्ग स्ट्रिस् क्रिल्म्याया भयाया ०३।भक्त रेपरयेत्रिणयन्यिरं विद्रभक व्वक्टा भजा दा भारत्या न पभंगका इभ लग्नली। केयुर ल्डिल्या वत्ये में लीको धन भन्ड एडे उपक्र याचित्र र प्रम द्वममुभान्त्रभाविकार मिल उब्हे विदेशज्ञान्य र एयत्न । वजारित विर रित देन उत्

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

07

केराभाप्टेमिनिक्स्याभाउद्यानि करतिकंग्रजमयः भने दली ध विकाक्ष्यक्ष्यक्षीनि ठिए इत्यं अंसे ही । १ । भाउराम उसंउवाडिविभस्काम्। विभूतिका ।। कर्मान्य हार के विस्कृति । प्रगंडड: वंहोर्दिष्यक्रकाम भेः भिज्ञास्यथार्वैः॥ परिज्ञ मस्परिकि वंत्रंभ्रथणयापित्रभ्य 11901 भजाका है संपरिप्रणयाभार दलेवान्यागावित्रे । गण्डिकेति ययारिक्रिच्यकम्मीग्यद्विद्वित्रेत्रेत्र्वे स्था

भगभग्रेयभय्य एवः भकः।भग किग्नु निरंदर डेंचन मधिमन भिरंधिरहज्भ। १३। भीभन डिहार्यामणा है। युगंनहरू यक् भले द्रावस्था । वन्यस्टिशियमयनिष्र यश्रक विश्व विष्य ममित्रयाभाष्ट्रशाभग्रयक्र अवीरलव इप्रधे सुंदे विभव्र विभव् पाउरण्यान। स्डीरण्यं उज्ज् छ एक वे उका दिरा नाविण विज्ञ अमिगडध्यामा। १५॥भासडी **ब्रास्ट्रियश्यक्त्र्याकावा**

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri-

Ê

03

व्यक्तिका विकास दिकि: प्रलाम भिल्लगर भुउवपुः अ परिल्डमपर्प एसे असि ज्युरुष्टाः डीडीकाप्यान्तिक दिउसभे सभ्यां प्रणयां भिरणग यभुउवपः।। भा स्वारंभिनि डे: भिड्य भिड्डे:मीय भर्ग भिष्डे: क्रमकि हिम्मार भिहिल्लाकर ये धिय लेकिने - मीलक्रजन्य लश्रदेष्ठिज्ञयविचेच्युक्ति ज्यं उथिकल्यानिरानि प्रयंत्रभद्गी जैते। ३३ । उन्तर्ध्रहें भएइ निहि

106

डेनेमिध्यरीथिडे: हिथेडी इ अगन्द्रान्द्रात्रहारह है। अग्रम्लन्डलन्यन वर्त्रध्यायः भद्याभेष्ठश्चाभित भराय निर्मित्र प्राप्त के: 139 भन्धिकरकभार्त्र वियद्वविमालपा दुनम्भरम उपरक्षां प्रमाणियां विकास भाग उभवउषर सरीप नक रहते। अवन्यानिक चित्रिक्षा अवस्थानिक अ । भविनयभवरहालन्युम् ण रंभपरिमिर्गिष्ट त्रक्षे । श्राष्ट्रभल भ

भारतीइकां क्रमयाडिमधिकुयाउँद थर् अस्तः॥३०॥भयभूर णिइनुयायमभद्रमान्त्र मन्त्र मान् कः। अधार्यामा अधार्थः भकीर्राक्षां हते:। ऐताली्क्र डिन् गिरिनमक्सुनुगीमंसूडेः॥ मके भक्रादेश प्राचिका में भड़े धयरिक्त उर् भाराधम्पर किन्द्रास्त्राध्यान्यस्यम् न्यम् उभाष्युरभागी मकिस्रभम नियविक्रमीकानिक द्वीप्रमही उहिल्लियम्मभिध् उपनि । अअ TOTOS PULL MATO Divided y coangour

भियमप्रस्तेभय । भाउ राउय भुक्ते यमं इयं कें उके नपियीय में भद्रः ॥३२।।उद्वेदकेथा वियो बाल्यं इंकल्एं उपार्थे कथा भिर्म लगाइमनदर्भे भगत् । यम रानेन उप काडिबीअभनी वयाभिउंडधनीयायधनेनिवेचिडना ।। यए पडिनरं शिड्न भूदं सुमिन् रण्लमभुथीय उभा उन्मान्त्र ढलभ्युङ निश्व कं दलके एसभिन्न क्रिप्भनिक लानिभय्रिभनि द्धनानि उदि समध्यामा । ३१ कित्रक्म उक्संयु अतिराभी।

कारिहासमानिङ्गिना सरीरण्य गिल्मिल्म्भानिकलानिउरिष भभध्याभाग्डाक्ध्र-युरे लवन्नभादे हे: कक लग्न कराहि है: । वेश्व उत्रापे:भनेशापिक रें भ्र सिग्नल्डीदले:। भग्रःकेडिक्पू र्पकृत्रकातः सम्बन्धियते भानग्रेभूत्वभक्षमञ्जभङ्गेङ सभनीजित उन्नावितालवङ्गीय भभविउपनिकक्क तक धाक भिष् उपने उभूतप्रवीयतभप्राप अगानिउद्धित्रभगध्याभारः अञ्चलवित्र लितित्र देशवर्ष

क्रभनीये प्रणाय इस्मवने । भिल् उविविण्नजारिष्ट्रमान्स्यजा लगनिकनक्षिरिका छेउँ क्रिडिमेरं प्रकेषिक्षप्रकेरान अवमिकिद्रभक्तम् लेक त्य

कल्पयाभिमाभित्रष्ठा भ्रयंनिभि क्रां १३। मार्गिन, भरीमानी गुरु द्रेया भागावित्सम् वरुवरे रणगरभविगिर्याभरभाभडभा नराकराव्याचा भारता भारत न्द्रभन्न निर्देशण रभूयेय ह क्रियाभिक्षयेभक्तरिधः अ अक्दि विभिन्न मिरंबरन भकीय अभि। विलेक्य यत्ति सभन्यन र्मा १२५ । ८ इंटर येन छन डे भूज ट्रेप्सीये: नीररणय विभववंडव ध्या ०५/ उभाय ५३वभभ मगीरमं उत्री रेरणया भिराण यथुमि

109

व्ह्यान ।। रेगिश्यम अविड्रं गड्म क्रम्म स्थान हमित्र गरी ग्योवः। हिन्य **उक्ति उपंक्तर जैनय उउउ** गमउभगडें वय्वेगभुरद्रः॥ मार्म्ह अस्ट्रिक्शन व्यापः। क्रिक्किलिउक्रः कि श्रामीकिक क्षः स्व ग्यान व्यक्षम्भाग्याः स्ट्रान्यान् उत मूर्यभाग्रभाग्यस्यवः। २३। द्रि इरड्रागेविरणभानेभिल्लाय म्रम्बर्ध यत्युज्ञन् कत्रक्रय भदंविउ नव्यंक्र विषेश्विम

भध्याना। २० ॥मउपर्युरे: भ क्रवमीडेरडिसे रहते: परन्पी डे: ध्रमादेशपाँद्र डी नर्डे हरणने मुं राण्यभ्वीरायाभाषाया ापीत् उभयमागां वह संयद्भां इ उंभयाभिज । विश्वलंग्रामी इसा क्रिणें रवसं मृतियं भगिध उभे ।। प्णाड्यगरण्य वरिमेक्नमं दिमिरिमयु हिम्पन्ययु । भी कारित्रमाउरम्भे तुम्बद्धा विक्रिक्ष उत्तर विक्रिक र्भाव लिय असे ल इ इ स्वावित

।।४वभिक्तिमान्टीनट्रीड वह्नययभयभाउने उभाउ गाय ।। भाषनयनविलाभलेलव्या विलिभ अतिलि उलेल इत्रभा लः॥युवरात्रभाषकाराम् लीलाकणवाउउपगडेनए विव नापरामिहणहामान हक स्नरिनं रिष्ट्रभव उड XECK सम्भन्। किमिकिकि मिक्रिकितिही कि कि धिभिकिष्यिभिक प्रियधीयषी चित्रमद्रः। १५। देश्यत्निज्ञल वन्भन्नसम्बन्धान्य भागा

MA

Ê

33

कभसेइदिहसप्रधानान यभउभवमायायीयानएडी पाठ उकलक द्वरिक्ये इने द्वापिक नुनगरिक्ष भागवाग्वानिस् विस्थाः प्रमाण्याः । विश्व व्यव्यात्र किया विश्व ययंश्रापयत्र उगारागियद्भेष अं भग्वायम् अवस्थानायाः गत्वकरः।।हारूभावणनेनिव द्वेनभाउन्सभाकरूयद्वेभयाभूष् इन्नि। एउ। कारुनवकमनीयेन्न नेख्यानिक ... भिष्याभिय समित मनं इन्यया भ्रयभद्रमधिकि है रा

कार्य गाउँ वा वा विकासीय भावभग्द्वयानि।।५९। उबदेवि प्रभाव निवस्त्र में स्वाप्त के निवस्त्र के निवस्त के निवस के निवस्त के निवस ययः॥ उद्दिकभूषे प्रमान्य भ्यनद्भुवक्रुभी सुरः॥०।॥ पर्यययार्थियाक्ट्र अट्टिव मणिरक लंदर है। इं भरापय क्यदेडकुडंप्रदिक अक्यिति चयाति। ५०॥ उत्तर्स लग्जाल उत्तर हरूं पुरेन बुराप के लिया है इ हं। मामेक्टरस्क्वारेडहं नमेर्यानीयययह हिल्ला ५3 यान्य वित्रयम् यहाले प्राचि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

含

इक्नक्ष्यस्य संक्ष्यम ध्यात्र । मिरिभविनिष्ठि उर्येग्ड पथायतिं सहरयक्षमत्में देशियं इने हा । भागावभयभ न्मिड्डिक्टिक्टिक्ट्राक्ट्र विउपरामाने। प्रभारत्युक प्रथमिक भिक्र गविष्ठवाभग्र देभाउदियाः ज्या एउसिम्स िष्वित्र स्वत्र अवित्र स्वत्र स्व स्वत्र स्वत् यवारे निजयपरे विष्ठ भन्ते उग्रहरे भिरदे के स्कूम चिनिष्ठरभा उपर विभ CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नवे। मार्ड गड्ड के वस्त्र के पनन क्रेययाभिग्क्रज्ञाभी। ज्ञानाडि मीउभमीभ्याभिउं निराज्य सल्य सिराद्रिउभी उपनीयभेदे दिथ र्के भाषेण दू धरणले निर्ण यं उ ना किल्याम्यान्य निया ग्रन्त अर्थे स्वयाया प्राप्त । माविरहिसभयः मिवनभानं भूष मयनंजनभंद्रियम् उर्वे । ७३। भजाजरीर में गंभी न्यभयभज 和为 एंग्ड्रगटहयुज्ञान् नाक्त्रोक् **५५५ अठयवाका मस्यक्** 34 सिर्भ नमलङ्गयुज्ञभगभ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

D.